महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का मध्यप्रदेश पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के प्रथम दीक्षांत समारोह में भाषण

स्थान :- जबलपुर, दिनांक :- 13 जनवरी, 2012 समय :- प्रात: 11 बजे

मुझे आज अत्यंत हर्ष हो रहा है कि मैं मध्यप्रदेश पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह के इस ऐतिहासिक अवसर पर अध्यक्षीय उद्बोधन दे रहा हूं। मैं इस मौके पर उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूं जिन्होंने अपने पाठ¬क्रम को सफलतापूर्वक पूर्णकर यहां से उपाधि प्राप्त की है। मैं उन सभी मेधावी, छात्र-छात्राओं को भी इस मौके पर हार्दिक बधाई देता हूं जिन्हें स्वर्ण पदकों से सम्मानित किया गया है। मुझे इस बात पर भी प्रसन्नता है कि विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय डेरी विकास मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती अमृता पटेल को सहकारिता के माध्यम से दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के कई कीर्तिमान स्थापित करने में अभूतपूर्व योगदान के लिये डाक्टरेट की मानद उपाधि से अलंकृत किया है। मैं इस नव निर्मित विश्वविद्यालय के प्रथम सफल दीक्षांत समारोह के लिये विश्वविद्यालय के कुलपति एवं समस्त विश्वविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देता हूं।

जैसा कि हम सबको विदित है कि प्रकृति प्रदत्त जल,वायु,भूमि एवं अनेकानेक वस्तुयें जो हमें जीवनयापन हेतु आवश्यक हैं सभी सुलभ हैं। उनका दोहन मानव जाति द्वारा सभ्यता की पहली भोर से आज तक होता आ रहा है। परन्तु इसके दोहन में मनुष्य का स्वार्थीपन झलकता है। उसने अपनी सुख-सुविधा के पीछे

प्रकृति को दुर्दान्त तरीके से लूटने जैसा कृत्य किया है और उसके परिणाम अब सामने आने लगे हैं।

जंगलों की कटाई से वन्य जीवों की जान संकट में है। कहीं लगातार वर्षा तो कहीं अवर्षा व जलवायु एवं मौसम में परिवर्तन हम सभी के द्वारा महसूस किये जा रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्तर-दक्षिणी ध्रुवों की बर्फ के पिघलने से समुंद्र का जल स्तर बढ़ने का गंभीर खतरा लगातार बढ़ रहा है।

मेरा वैज्ञानिक समुदाय से यही कहना है कि वे प्रकृति के प्रति समग्र दृष्टिकोण रख विकास कार्य करें। आप सभी पशुपालन, पशुचिकित्सा, पशु प्रबंधन, पशु विज्ञान के परिपक्व अध्येता हैं। आपके कार्यों में दया व सहिष्णुता का भाव परिलक्षित होता है। हम सभी प्रकृति के अंग हैं और पशु भी प्रकृति की एक अनूठी देन है और आप उनका विकास- अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। आपके कार्यों के लिए मैं साधूवाद देता हूं।

आपके विश्वविद्यालय की स्थापना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश एवं देश की पशु सम्पदा को उत्तरोत्तर बढ़ाना है। पशुपालन और कृषि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। कृषक के घर पर जो भी पशु हो वे उपयोगी हो तभी उसकी सार्थकता होती है। प्रकृति संतुलन में पशु सम्पदा की बहुतअधिक महत्ता है। पशुओं द्वारा हमें अनेक उपयोगी पदार्थ प्राप्त होते हैं। शुद्ध दूध अमृत के समान है, परन्तु आज कल दूध में मिलावट समाज के लिए एक बहुत बड़ा अभिशाप है। इसके अलावा पशुओं के आहार व स्वास्थ्य के लिये कई प्रकार की दवाईयों व रसायनों जैसे खरपतवार नाशक या कीटनाशक का अधिक से अधिक उपयोग होने के कारण दूध में भी उनके सूक्ष्म अवशेष पाये जाते हैं जो स्वास्थ्य के लिये अत्यंत हानिकारक है। हमें हानिकारक अवशेषों से रहित दूध एवं उनके उत्पाद बाजार को देना होंगे। इसी तरह

अंडा, मांस, मछली का भी मनुष्य के आहार व स्वास्थ्य में काफी महत्व है। पशुओं के अन्य उत्पाद जैसे कि गोबर से खाद एवं गैस का उत्पादन जो कि हमारी ऊर्जा या ईधन की समस्या का काफी कुछ हल हो सकता है हम मनुष्यों एवं प्रकृति के लिए भी सहयोगी हैं।

आप सभी वैज्ञानिकों से अनुरोध है कि आप अपने आस-पास के जन साधारण या ग्रामीण अंचल की आवश्यकताओं के अनुरूप योजनायें बनायें ताकि उनका आर्थिक व सामाजिक विकास हो। उनकी आर्थिक सम्पन्नता ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए क्योंकि अभी भी हमारे देश में बहुत अधिक आर्थिक असमानता विद्यमान है।

आर्थिक असमानता अनेक समस्याओं का कारण बनती है। जैसे गरीबी, अशिक्षा, कुपोषण आदि। इस परिदृश्य में हमें चीन जैसे देशों से प्रेरणा लेनी चाहिए। वहां पर विश्वविद्यालय उद्योगों की तरह कार्य कर रहे हैं। उनके यहां जो भी नये उत्पाद बाजार में आ रहे हैं वे सभी विश्वविद्यायों के अनुसंधान की देन हैं। अतः हमें भी उसी स्तर का कार्य करना होगा। तभी नये-नये विश्वविद्यालयों का खुलना सार्थक होगा और हमारी आर्थिक सम्पन्नता सुदृढ़ होगी। आप सभी प्रबुद्ध वैज्ञानिक इस विषय पर अवश्य चिन्तन कर देश की आर्थिक प्रगति के प्रमुख दावेदार बनें।

पशु चिकित्सकों की देश की आर्थिक उन्नति में अहम भूमिका है। सकल घरेलू उत्पाद में पशु उत्पादनों की साझेदारी पाचं प्रतिशत से भी अधिक की दर से बढ़ रही है जो कि कृषि उत्पादों की तुलना में भी अधिक है। विश्व मानचित्र में भारत दुग्ध उत्पादन में सर्वोच्च स्थान पर है जबकि बकरी उत्पादन में द्वितीय, भैंस उत्पादन में तृतीय व कुक्कुट एवं अंडा उत्पादन में पांचवें स्थान पर है। इस कारण प्रति व्यक्ति प्रोटीन की आवश्यकता का अन्तर अब आनुपातिक रूप से घट रहा है, ये आंकड़े आशाजनक हैं परन्तु अभी भी उत्पादन बढ़ाने की बहुत आवश्यकता है।

ताकि जनसाधारण को सस्ती दर पर ये पशुजन्य प्रोटीन पदार्थ उपलब्ध हो सकें। 2007 में मध्यप्रदेश की पशु गणना के अनुसार गौवंश-219 लाख, भैंस- 91 लाख, बकरी 90 लाख, मुर्गी 120 लाख है परन्तु इनकी उत्पादन क्षमता राष्ट्रीय आवश्यकता से काफी कम है। इसलिये प्रदेश में उपलब्ध पशुओं एवं गौवंश के नस्ल सुधार के साथ-साथ अगर उनके पोषण पर विशेष ध्यान दिया जाये तो उनकी उत्पादकता काफी बढ़ाई जा सकती है। मध्यप्रदेश में पशुपालन विकास की काफी अधिक संभावनायें है। वर्तमान में दुग्ध उत्पादन लगभग 1125 लाख टन है। भविष्य में देश के दुग्ध उत्पादन का लक्ष्य 1720 लाख टन निर्धारित किया है जो कि 2020 तक प्राप्त करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मध्यप्रदेश एक अग्रणी सहयोगी प्रदेश बन सकता है। इसके लिये आवश्यक है कि प्रदेश का एक मात्र पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय पशुपालन व कृषि विभाग आपस में समन्वय से कार्य करें जिसमें आप सभी की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

मैं आप सब की बहुत प्रशंसा करता हूं कि आपने पशु चिकित्सा विज्ञान को अपने भविष्य के कर्मक्षेत्र के रूप में चयनित किया है। वैसे तो अधिकतर छात्र मेडिकल या इंजीनियरिंग में जाना चाहते हैं, परन्तु आज वर्तमान परिवेश में आई टी, वित्त, व्यापार, प्रबंधन और कानून जैसे विषयों में अच्छी नौकरियों और ज्यादा वेतन मिलने के कारण युवाओं का सबसे ज्यादा रूझान है, परन्तु आप जिस विषय के ज्ञाता हैं उसकी एक अलग ही महत्ता और उपयोगिता है। आप ग्रामीण एवं कृषक समाज की आर्थिक उन्नति के माध्यम हैं इसके साथ ही आप अपने ज्ञान से मूक पशुओं की सेवा कर उसके दर्द को कम करते हैं वह बहुत ही महान कार्य है।

दीक्षांत समारोह वैदिक कालीन परम्परा है जो गुरू एवं शिष्य के अद्भुत संबंध का स्मरण कराती है इस अवसर पर गुरू अपने शिष्य से एक आदर्श जीवन का वचन लेता है।

मैं उन युवाओं व होनहार छात्रों से कहना चाहूंगा जिन्हें आज उपाधि प्राप्त हुई है ईश्वर आपके ऊपर बहुत मेहरबान है। आपके प्रयासों का फल उपाधि के रूप में मिला है। आपके शिक्षक और माता-पिता को आपकी उपलब्धियों पर निश्चित ही गर्व होगा। अब आपसे उनकी बहुत उम्मीदें हैं और ऐसी ही देश को भी अपेक्षायें हैं।

अभी तक आप एक सुरक्षित वातावरण में शिक्षक और माता-पिता के संरक्षण में थे। अब आपके पंख पूर्ण विकसित हो गये हैं उनसे अब खुले आसमान में उड़ सकते हैं और आप अपने लिये उपयुक्त स्थान ढूंढ सकते हैं। जीवन सम्भावनाओं से भरा हुआ है परन्तु उसमें अनेक चुनौतियां भी हैं।

मैं एक बार पुन: आप सबको बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

जयहिन्द